T.D.C- 1

Psy- 2nd Paper

AGORAPHOBIA - एगोरा फोबिया

एगोरा फोबिया का शाब्दिक अर्थ भीड़-भाड़ या बाजार स्थलों से डर से होता है। परंतु वास्तविकता यह है कि एगोरा फोबिया में कई तरह के डर सम्मिलित होते हैं, जिसका केन्द्र बिन्दु सार्वजनिक या आम स्थान भी होता है। जहाँ से व्यक्ति को ऐसा विश्वास होता है कि किसी तरह की घटना या दुर्घटना होने पर न तो कोई बचाव संभव है और न ही कोई बचाने के लिए आ सकता है। खरीदारी करने के लिए जाने से डर, भीड़-भाड़ वाले स्थानों में प्रवेश से डर तथा यात्रा करने से डर आदी एगोरा फोबिया के सामान्य अंश हैं।

नैदानिक मनोवैज्ञानिकों एवं मनोचिकित्सकों के उपचार गृह में आने वाले दुर्भीति रोगियों में से करीब 60% रोगी एगोरा फोबिया के ही होते हैं। यह महिलाओं में अधिक होता है तथा इसकी शुरुआत प्रायः किशोरावस्था तथा आरंभिक वयस्कावस्था में होता है।

एगोरा फोबिया की शुरुआत बार-बार आतंक दौरा होने से सामान्यतः होता है। इसमें कुछ और लक्षण भी स्पष्ट रूप से देखने को मिलते हैं। इसमें तनाव, घुमड़ी हल्का-फुल्का वाह्यता व्यवहार तथा बार-बार यह देखना की दरवाजा ढीक से बंद है कि नहीं या विद्युत के नीचे आकर यह देखना की कोई अंदर है तो नहीं तथा विषादी विकृति भी देखने को मिलती है। Buglass (1977) तथा उनके सहयोगियों के अनुसार एगोरा फोबिया के रोगियों के करीब 93% रोगी ऐसे पाये गये जिसमें ऊँचाई एवं बंद जगहों से भी असंगत डर पाया गया। एगोरा फोबिया में विखरित एवं अविशिष्ट चिंता पाया जाता है तथा मार्क्स के अनुसार ऐसे रोगियों या क्लायंट के स्वायत्त तंत्रिका तंत्र से लिया गया रिकार्ड यह दिखलाता है कि जब वे आराम करते होते भी हैं तो उनमें उत्तेजना का स्तर काफी ऊँचा होता है

DSM-IV (TR) में एगोरा फोबिया की उत्पति विभीषिका विकृति (Panic disorder) के इतिहास के बिना या इसके साथ दोनों ही तरह के होते माना गया है। कुछ ऐसे

व्यक्ति होते हैं जिनमे विभीषिका विकृति मे हुए आतंक या विभीषिका दौरा (attack) के कारण एगोरा फोबिया विकसित हो जाता है तथा कुछ ऐसे व्यक्ति होते है जिनमे ऐसे आतंक या विभीषिका का कोई इतिहास नही होता है फिर भी उनमे यह रोग विकसित हो जाता है। यही कारण है कि DSM IV (TR) मे एगोराफोबिया मे वास्तविक दुर्भीति का एक प्रकार न मानकर विभीषिका विकृति (Panic Disorder) का एक उपप्रकार बतलाकर इसकी व्याख्या की गई।

SOCIAL PHOBIA समाजिक दुर्भीति :→

समाजिक दुर्भीति वैसे दुर्भीति को कहा जाता है जिसमे व्यक्ति की उपस्थिति का सामना करना पड़ता है। व्यक्ति को ऐसी परिस्थिति में डर बना रहता है कि उसका मूल्यांकन लोग करेंगे। फलतः वह ऐसी परिस्थिति से दूर हटना चाहता है तथा चिंतित नजर आता है तथा काफी घबड़ाया हुआ दिखता है। इसे समाजिक चिंता विकृति भी कहा जाता है। ऐसे लोग आम लोगो के बीच बोलने तथा कुछ विशेष तरह की भूमिका अदा करने से काफी डरते हैं। इतना ही नही ऐसे लोग आम लोगो के साथ खाना खाने से भी घबड़ाते हैं।

समाजिक दुर्भीति की शुरूआत प्रायः किशोरावस्था मे होती है तथा 25 साल के बाद शायद ही किसी व्यक्ति मे इसका प्रकोप होता है। इसका कारण है कि किशोरावस्था मे ही व्यक्ति प्रथम बार सही अर्थ में समाजिक चेतना तथा अन्य लोगो के साथ अन्तःक्रियाओ से अवगत होता है। यह विकृति सचमुच मे पुरूष एवं महिलाओ मे समान रूप से होता है। टर्नर तथा उनके सहयोगियो (1990) के अनुसार - समाजिक दुर्भीति का अन्य विकृतियों से मिलकर होने की संभावना अधिक होती है। प्रायः यह देखा गया है कि विकृति समान्यीकरण चिंता विकृति, विशिष्ट दुर्भीति, विभिषिका विकृति तथा बाह्य विकृतियों के साथ-साथ भी उत्पन्न होता है।